आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, जब तुमको अल्लाह का हुक्म पूरा करके खुशी हो और अल्लाह के किस एक भी हुक्म के छूट जाने पर ग़म हो, तो समझ लो, तुम मोमिन हो।

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है, कि ईमान का मज़ा उसने चखा, जो–

अल्लाह तआला को रब,
इस्लाम को ज़रूरतों के पूरा करने का तरीक़ा (दीन) और
मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल मानने पर राज़ी हो जाए।

(मुस्लिम)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दर्याफ़्त किया, कौन–सा ईमान अफ़ज़ल है?

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, वह ईमान जिसके साथ हिजरत हो।

मैंने पूछा, कि हिजरत क्या है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, हिजरत यह है, कि तुम बुराई को छोड़ दो।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अम्र बिन शुऐब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है, कि कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता, जब तक हर अच्छी और बुरी तक़्दीर पर ईमान न लाए।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने दुनिया का ज़िक्र किया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ग़ौर से सुनो! ध्यान दो यक़ीनन

सादगी, ईमान का हिस्सा है।

(अबू दाऊद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, कि कोई शख़्स उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता, जब तक कि उसकी तमाम ख़्वाहिशात इस तरीक़े (दीन) के ताबेअ न हो जाएं, जिसको मैं लेकर आया हूं।

(इब्ने माजा)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अपनी ज़िंदगी का बड़ा हिस्सा इस तरह से गुज़ारा है, कि हममें से हर एक क़ुरआन से पहले ईमान सीखता था और जो भी सूरः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल होती थी, हर एक उसके हलाल और हराम को ऐसे सीखता था, जैसे तुम लोग क़ुरआन सीखते हो, और जहा वक़्फ़ करना मुनासिब होता था, उसको भी सीखता था, अब मैं ऐसे लोगों को देख रहा हूं जो ईमान से पहले क़ुरआन हासिल कर लेते हैं और सूरः फ़ातिहा शुरू से लेकर आख़िरी तक सारी पढ़ लेते हैं, और उन्हें पता नहीं चलता कि 'सूरः फ़ातिहा' किन कामों का हुक्म दे रही है और किन कामों से रोक रही है और इस सूरः में कौन–सी आयत ऐसी है, जहां जाकर रुक जाना चाहिए और सूरः फ़ातिहा को रद्दी खजूर की तरह बिखेर देता है, यानी जल्दी–जल्दी पढ़ता है।

(हैसमी, 1, 165)

हज़रत जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, हम नौ उम्र लड़के और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुआ करते थे, पहले हमने ईमान सीखा, जिससे हमार ईमान और ज़्यादा हो गया।

(इब्ने माजा)

अनमोल मोती

अल्लाह तआला ने अपने बंदों को खुद यह दावत दी है, कि वह अल्लाह पर ईमान लाएं, ताकि अल्लाह तआला उन्हें अपनी हिमायत और हिफ़ाज़त में ले लें।

(हैसमी, 5, 232)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कोई बंदा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक कि वह ईमान की चोटी तक न पहुंच जाए। और ईमान की चोटी पर उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक उसके नज़दीक फ़क़ीरी, मालदारी से और छोटा बनना, बड़े बनने से ज़्यादा महबूब न हो जाए और उसकी तारीफ़ करने वाला और उसकी बुराई करने वाला बराबर न हो जाए।

(हुलीया, 1, 132)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि बंदा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक आख़िरत पर दुनिया को तर्जीह देने वाले लोगों को कम अक़्ल न समझे।

(हुलीया, 1, 306)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः जो इल्म और ईमान चाहेगा अल्लाह तआला उसको ज़रूर देंगे, जैसे इब्राहीम अलै० को दिया, कि उस वक़्त इल्म और ईमान न था।

(हुलीया, 1, 325)

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि बंदे का अल्लाह से और अल्लाह का बंदे से उस वक़्त तक ताल्लुक़ रहता है, जब तक वह अपनी ख़िदमत दूसरों से न कराए। बल्कि अपने काम वह खुद करे, और जब वह अपनी ख़िदमत दूसरों से कराता है, तो उस पर हिसाब वाजिब हो जाता है।

(हुलया, 1, 214)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि बंदे के और उसकी रोज़ी के दर्मियान एक पर्दा पड़ा हुआ है, अगर बंदा सब्र से काम लेता है तो उसकी रोज़ी खुद उसके पास आ जाती है। और अगर वे बे-सोचे समझे रोज़ी कमाने में घुस जाता है, तो वह उस पर्दे को फाड़ लेता है लेकिन अपने मुक़द्दर से ज़्यादा नहीं पाता है।

(कंज़ुल उम्माल)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि ईमान सिर्फ़ ईमानी सूरत बना लेने से नहीं मिलता।

(कंज़ुल उम्माल, 8, 210)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ लोगो! अपने बातिन की इस्लाह कर लो, तुम्हारा ज़ाहिर ठीक हो जाएगा। तुम अपनी आख़िरत के लिए अमल करो, तुम्हारे दुनिया के काम अल्लाह तआला की तरफ़ से खुद ब खुद हो जाएंगे।

(बिदाया व नहाया, 7, 56)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि कोई बंदा अल्लाह के यहां चाहे जितनी इज़्ज़त व शरफ़ वाला हो, लेकिन जब दुनिया की कोई चीज़ और सामान उसे मिलता है, तो उस चीज़ के लेने की वजह से अल्लाह के यहां उसका दर्जा कम हो जाता है।

(हुलीया, 1, 306)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि कुछ लोगों के जिस्म तो दुनिया में रहते हैं, लेकिन उनकी रूहों का ताल्लुक़ अल्लाह तआला से जुड़ा होता है, ऐसे ही लोग, इस ज़मीन पर अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा हैं और यही लोग इसके दीन की दावत देने वाले हैं, हाए,!! मुझे इन लोगों के देखने का कितना शौक़ है।

(कंज़ुल उम्माल, 5, 231)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इब्ने आदम पर वही चीज़ मुसल्लत होती है, इब्ने आदम जिस चीज़ से डरता है। अगर इब्ने आदम, अल्लाह के सिवा किसी चीज़ से न डरे, तो उस पर अल्लाह के सिवा कोई मुसल्लत न हो।

इब्ने आदम को उस चीज़ के हवाले कर दिया जाता है, जिस चीज़ से उसे नफ़ा या नुक़सान मिलने का यक़ीन होता है, अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी चीज़ से नफ़ा या नुक़सान का यक़ीन न रखे तो अल्लाह तआला उसे किसी चीज़ के हवाले न करे।

(कंज़ुल उम्माल, 7, 65)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने लोहे महफ़ूज़ को सफ़ेद मोती से पैदा किया, जिसके दोनों किनारों के पट्ठे लाल याक़ूत के हैं।

(तफ़्सीरे इब्ने कसीर, 4, 267)

अल्लाह तआला ने मूसा अलै० की तरफ़ वही भेजी कि ऐ मूसा! फ़क़ीर वह है जो मुझे अपना कफ़ील और कारसाज़ न समझे और मरीज़ वह है जो मुझे तबीब न समझे और ग़रीब वह है जो मुझे देने वाला और हमदर्द न समझे।

(जवाहर सुन्नत 61)

हदीस क़ुदसी : ऐ मेरे बंदे! एक इरादा तू करता है, और एक इरादा मैं करता हूं, लेकिन होता वही है, जो मैं चाहता हूं। अगर तू अपनी चाहतों को मेरे ताबेअ नहीं करेगा, तो मैं तेरी ही चाहतों में तुझे थका दूंगा और दूंगा वही जो मैं चाहता हूं।

(कंज़ुल उम्माल, 54)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि जो बंदा इस्लाम की हालत पर सुबह व शाम करता है, तो दुनिया की कोई चीज़ इसका नुक़सान नहीं कर सकती है।

(हुलीया, 1, 132)

हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मोमिन के दिल की मिसाल चिड़िया जैसी है। जो हर दिन न जाने कितनी बार इधर–उधर पलटता रहता है।

(हुलीया, 1, 102)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि सुस्त आदमी की मुक़द्दर में जो लिखा है, वह उसे मिलकर रहेगा, कोई तेज़ आदमी उससे आगे बढ़कर उसके मुक़द्दर का नहीं ले सकता। इसी तरह ख़ूब ज़्यादा कोशीश करने वाला इंसान

वह चीज़ हासिल नहीं कर सकता, जो उसके मुक़द्दर में न लिखी हो।

(हुलीया, 1, 134)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो गुनाह से भी बड़ी होती है, कि अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दाएं-बाएं के फ़रिश्तों से शर्म नहीं आती, तो यह इसके किए हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है।

(कंज़ुल उम्माल, 8, 224)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि अपने लिए आसानी और रुख़्सत वाला रास्ता इख़्तियार न करो, वरना तुम ग़फ़लत में पड़ जाओगे और अगर तुम ग़फ़लत में पड़ जाओगे तो नुक़्सान उठाओगे।

(बिदाया व नहाया, 7, 307)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि तुम अल्लाह से यक़ीन मांगो और उसके सामने आफ़ियत का शौक़ ज़ाहिर करो और दिल की सबसे बेहतर कैफ़ियत दाईमी यक़ीन है।

(बिदाया व नहाया, 7, 307)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब इंसान गहरी नींद में सो जाता है, तो उसकी रूह को अर्श पर चढ़ाया जाता है। जो रूह अर्श पर पहुंचकर जागती है, उसका ख़्वाब सच्चा होता है और जो उससे पहले ही जाग जाती है उसका ख़्वाब झूठा होता है।

(हैसमी, 1, 164)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमाते, कि ऐ अल्लाह! मैं पनाह चाहता हूं इस नमाज़ से जो नफ़ा न पहुंचाती हो।

(अबू दाऊद शरीफ़, 1549)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब नमाज़ की सफ़ें खड़ी होती हैं, तो

आसमानों के दरवाज़े,

जन्नत के दरवाज़े और
जहन्नम के दरवाज़े,
खोल दिए जाते हैं और सजी हुई हूरें ज़मीन की तरफ़ झांकती हैं।

(हाकिम, 3, 494)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुक़द्दर के झुठलाने वाले की अयादत न किया करो, और न ही उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा करो।

(तफ़्सीरे इब्ने कसीर, 4, 247)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि उम्मत का पहला शिर्क मुक़द्दर का झुठलाना है।

(अहमद)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जिनके अमल इल्म के ख़िलाफ़ होंगे, वह अमल अल्लाह के पास ऊपर नहीं जाएंगे।

(कंजुल उम्माल, 5, 233)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम जितना चाहे इल्म हासिल कर लो, इल्म हासिल करने का सवाब तब मिलेगा, जब उस इल्म पर अमल करोगे।

(इब्ने अदी, ख़तीब)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उस इबादत में ख़ैर नहीं, जिसका दीनी इल्म न हो और उस दीनी इल्म में ख़ैर नहीं, जिसे आदमी समझा न हो और कुरआन की उस तिलावत में कोई ख़ैर नहीं, जिसमें इंसान कुरआन की माइने और मतलब में ग़ौर व फ़िक्र न करे।

(हुलीया, 1, 177)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि सबसे ज़्यादा गुनाह करने वाला इंसान वह है, जो कुरआन पढ़ ले, लेकिन उसके माइने और मतलब को न समझे, फिर वह बच्चे, गुलाम, औरत और बांदी को कुरआन सिखाए, फिर ये सारे लोग मिलकर कुरआन के ज़रिए इल्म वालों से झगड़ा करें।

(जामेअ बयानुल इल्म, 2, 194)

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया, कि जिसका इल्म, यक़ीन तक, यक़ीन, डर तक, डर अमल तक, अमल, तक़्वा तक, तक़्वा, इख़्लास तक, और इख़्लास मुशाहदे तक नहीं पहुंचता, तो वह शख़्स हलाक हो जाता है।

(पांच मिनट का मदरसा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि अल्लाह तआला से वही लोग डरते हैं, जो उसकी कुदरत का इल्म रखते है।

(सूरः फ़ातिर, 28)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उम्मत वह इंसान है, जो लोगों को भलाई और ख़ैर सिखलाए।

(इब्ने साद, 4, 165)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि अय्यूब अलै० के सामने एक मिस्कीन पर ज़ुल्म हो रहा था तो उस मिस्कीन ने हज़रत अय्यूब अलै० से मदद मांगी कि ज़ुल्म को रोक दे, लेकिन उन्होंने उसकी मदद न की इतनी सी बात पर अल्लाह तआला ने उनको बीमारी में मुब्तला करके इनका सारा माल ख़त्म कराकर आज़माइश में डाल दिया।

(कंज़ुल उम्माल, 2, 248)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को किसी तक़ाज़े पर भेजते थे, तो हज़रत जिब्रील अलै० उनको दाहिनी तरफ़ से और हज़रत मिकाइल अलै० बाईं तरफ़ से उनको अपने घेरे में ले लेते थे, जब तक वह वापस न आएं, तब तक ये दोनों इनके साथ रहते हैं।

(अहमद, 1, 199, इब्ने साद, 3, 38)

सत्ताइस (27) रमज़ान को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद किए गए और सत्ताइस रमज़ान ही को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमानों पर उठाया गया।

(हुलीया, 1, 63)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीहत की ऐ साद! तुमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी

बनाए जाने से लेकर हम से जुदा होने तक जिस काम को करते हुए देखा है वह काम तुम्हारे सामने है। लिहाज़ा इस काम की पाबंदी करते रहना क्योंकि यही असल काम है।-यह मेरी तुमको ख़ास नसीहत है। अगर तुमने इस काम को छोड़ दिया इस काम की तरफ़ तवज्जोह न दी तो तुम्हारे सारे अमल बर्बाद हो जाएंगे और तुम घाटा उठाने वाले बन जाओगे।

गुनाहे कबीरा

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब किसी मोमिन से गुनाहे कबीरा सरज़द हो जाता है, तो ईमान का नूर उसके दिल से निकल कर उसके सर पर साया कर लेता है।

(मुस्लिम शरीफ़)

गुनाहे कबीरा (वह गुनाह जो बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते) जिन पर वाइद आई हैं, जिनकी तायदाद इकहत्तर (71) है,

जो बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते। एक गुनाह भी जहन्नम में ले जाने के लिए काफ़ी है।

1. अमल बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर को न करना।
2. सूद देना।
3. सूद लेना।
4. सूद लिखना।
5. सूद पर गवाह बनना
6. ज़ुल्म करना।

7. जुआ खेलना।
8. झूठ बोलना।
9. चोरी करना।
10. रिश्वत देना।
11. रिश्वत लेना।
12. रिश्वत के मामले में पड़ना।
13. चुग़ली करना।
14. डकेती डालना।
15. तकब्बुर करना।
16. बदकारी करना।
17. रियाकारी (दिखावे के लिए अमल) करना।
18. खुदकुशी करना।
19. तोहमत लगाना।
20. बद–गुमानी करना।
21. झूठी गवाही देना।
22. क़तअ रहमी (रिश्तेदारी तोड़ना) करना।
23. झूठी क़सम खाना।
24. धोखा देना।
25. नस्ब में ताअन करना।
26. वायदा ख़िलाफ़ी करना।
27. यतीम का माल खाना
28. फ़ख्र करना।
29. बुरे लक़ब से पुकारना।
30. शरई पर्दा न करना।
31. किसी की ग़ीबत करना।
32. अमानत में ख़्यानत करना।

33. किसी की ज़मीन पर मिल्कीयत का दावा करना।
34. शराब पीना।
35. फ़र्ज़ महकामात को छोड़ना।
36. बे–ख़ता जान को क़त्ल करना।
37. पड़ोसी को तक्लीफ़ पहुंचाना।
38. हट्टे–कट्टे होकर भीख मांगना।
39. किसी का ऐब तलाश करना।
40. हिकारत से किसी पर हंसना।
41. छोटों पर रहम न करना।
42. बड़ों की इज़्ज़त न करना।
43. जादू टोना करना या कराना।
44. माल को गुनाह के काम में ख़र्च करना।
45. किसी जानदार की तस्वीर बनाना।
46. किसी के नुक़्सान पर ख़ुश होना।
47. किसी के माल का नुक़्सान करना।
48. किसी जानदार को आग में जलाना।
49. मर्दों को औरतों का लिबास पहनना।
50. औरतों को मर्दों का लिबास पहनना।
51. किसी की आबरू को सदमा पहुंचाना।
52. पिछले गुनाह पर आर (शर्म) दिलाना।
53. अल्लाह की रहमत से ना–उम्मीद होना।
54. बिला वजह किसी को बुरा–भला कहना।
55. उजब यानी अपने आपको अच्छा समझना।
56. किसी की कोई चीज़ बिला इजाज़त लेना।
57. काफ़िरों का और फ़ासिक़ों का लिबास पहनना।
58. बग़ैर शरई उज़्र के जमाअत की नमाज़ छोड़ना।

59. दुनिया कमाने के लिए इल्मे दीन हासिल करना।
60. ज़रूरतमंद की बावजूद वुस्अत के मदद न करना।
61. ऊपर से पहने हुए कपड़ों से टख़ने को ढांकना।
62. दाढ़ी मूंढाना, या एक मुश्त से कम पर कुतरना।
63. शरीअ तरीक़े पर तरके को तक़्सीम न करना, बिल-ख़ुसूस बहनों को मीरास से उनका हिस्सा न देना।
64. बुख़्ल यानी शरीअत में जहां-जहां ख़र्च करने का हुक्म दिया गया है वहां न करना।
65. मज़दूर से काम लेकर उसकी मज़दूरी न देना, या कम देना, या देर करना।
66. हिरस यानी माल जमा करने में हराम और ना-जाइज़ तरीक़ों से न बचना।
67. किसी से कीना रखना, यानी बदला लेने का जज़्बा दिल में रखना।
68. किसी दुन्यावी रंज से तीन दिन से ज़्यादा बोलना छोड़ देना।
69. पेशाब की छींटों से बदन और कपड़ों की हिफ़ाज़त न करना।
70. मां-बाप की नाफ़रमानी करना और उनको तक्लीफ़ देना।
71. भूखों और नंगों की हैसियत के मुवाफ़िक़ मदद न करना।

तौबा करने में 4 शर्तें हैं। जिन्हें उलमा इकराम से मालूम करके अमल में लाया जाए।

नमाज़ के बारे में हदीस

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने मुनब्बहात में हज़रत उस्मान गनी रज़ि० से नक़ल किया है कि जो शख़्स नमाज़ की मुहाफ़ज़त (हिफ़ाज़त) करे, औक़ात (वक़्त) की पाबंदी के साथ उसका एहतिमाम करे, हक़ तआला शानुहू नौ चीज़ों के साथ उसका इक्राम फ़रमाते है-

1. अव्वल यह कि उसको खुद महबूब रखते हैं,
2. दूसरे तन्दुरुस्ती अता फ़रमाते हैं,
3. तीसरे फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं,
4. चौथे उसके घर में बरकत अता फ़रमाते हैं,
5. पांचवें उसके चेहरे पर सुलहा के अन्वार ज़ाहिर होते हैं,
6. छठे उसका दिल नर्म फ़रमाते हैं,
7. सातवें वह पुल सिरात पर बिजली की तरह गुज़र जाएगा,
8. आठवें जहन्नम से नजात फ़रमा देते हैं,
9. नवें जन्नत में ऐसे लोगों का पड़ोस नसीब होगा, जिनके बारे में 'ला ख़ौफ़ुन अलैहि व ला हुम यहज़नून' (आयत) वारिद हुई है। यानी 'कियामत में उनको न कोई ख़ौफ़ होगा, न वह ग़मगीन होंगे।'

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नमाज़ दीन का स्तून है और इसमें दस ख़ूबियां है—

1. चेहरे की रौनक़ है, 2. दिल का नूर है, 3. बदन की राहत और तंदुरुस्ती का सबब है, 4. क़ब्र का उन्स (चाह) है, 5. अल्लाह की रहमत उतरने का ज़रिया है, 6. आसमान की कुंजी है, 7. आमालनामों की तराज़ू का वज़न है, (कि उसमें नेक आमाल का पलड़ा भारी हो जाता है) 8. अल्लाह की रिज़ा का सबब है, 9. जन्नत की क़ीमत है, और 10. दोज़ख़ की आड़ है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नमाज़ छोड़ना आदमी को कुफ़्र से मिला देता है। एक जगह इर्शाद है कि बंदे और कुफ़्र को मिलाने वाली चीज़ सिर्फ़ नमाज़ छोड़ना है। एक जगह इर्शाद है कि ईमान और कुफ़्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क़ है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स की एक नमाज़ भी फ़ौत हो गयी, वह ऐसा है कि गोया उसके घर के लोग और माल व दौलत सब छीन लिया गया हो।

एक और हदीस में भी यही क़िस्सा आया है। उसमें यह भी है कि ऐलान होगा, आज मह्शर वाले देखेंगे कि करीम लोग कौन हैं और एलान होगा कहां हैं वे लोग जिनको तिजारती मशाग़िल अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से नहीं रोकते थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया गया है कि जो शख़्स नमाज़ को क़ज़ा कर दे, गो वह बाद में पढ़ भी ले, फिर भी अपने वक़्त पर न पढ़ने की वजह से एक हुक़ुब जहन्नम में जलेगा और हुक़ुब की मिक़्दार 80 साल की होती है और एक साल 360 दिन का और क़ियामत का एक दिन एक हज़ार साल के बराबर होगा। इस हिसाब में एक हुक़ुब की मिक़्दार 2 करोड़ 88 लाख साल हुई।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स नमाज़ का एहतिमाम करता है, हक़ तआला शानुहू पांच तरह से उसका इक्राम व एज़ाज़ फ़रमाते हैं–

1. एक यह कि उस पर से रिज़्क़ की तंगी हटा दी जाती है।

2. दूसरे यह कि अज़ाबे क़ब्र हटा दिया जाता है।

3. तीसरे यह कि अज़ाबे क़ियामत को उसके आमालनामे दाएं हाथ में दिए जाएंगे (जिनका हाल सूरः अल–हाक़्क़ा में मुफ़स्सल मज़्कूर है कि जिन लोगों के नामए–आमाल दाहिने हाथ में दिए जाएंगे, वे निहायत खुश व ख़ुर्रम हर शख़्स को दिखाते फिरेंगे)।

4. और चौथे यह कि पुलसिरात पर से बिजली की तरह गुज़र जाएंगे।

5. पांचवा यह कि हिसाब से महफ़ूज़ रहेंगे और जो शख़्स नमाज़ में सुस्ती करता है, उसको पंद्रह तरीक़े से अज़ाब होता है– पांच तरह दुनिया में और तीन तरह मौत के वक़्त और तीन तरह क़ब्र में और तीन तरह क़ब्र से निकलने के वक़्त। दुनिया के पांच तो यह हैं–

अव्वल यह कि उसकी ज़िंदगी में बरकत नहीं रहती।

दूसरे यह कि सुलहा (नेक लोग) का नूर उसके चेहरे से हटा दिया जाता है।

तीसरे यह कि उसके नेक कामों का अज्र हटा दिया जाता है।

चौथे उसकी दुआएं क़बूल नहीं होतीं।

पांचवें यह कि नेक बंदों की दुआओं में उसका इस्तिहक़ाक़ (हक़) नहीं रहता।

और मौत के वक़्त तीन अज़ाब ये हैं कि–

अव्वल ज़िल्लत से मरता है,

दूसरे भूखा मरता है,

तीसरे प्यास की शिद्दत (तेज़ी) में मौत आती है अगर समुंद्र भी पी ले तो प्यास नहीं बुझती।

क़ब्र के तीन अज़ाब ये हैं–

अव्वल, उस पर क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि पसलियां एक दूसरी में घुस जाती है।

दूसरे क़ब्र में आग जला दी जाती है।

तीसरे क़ब्र में एक सांप उस पर ऐसी शक्ल का मुसल्लत होता है जिसकी आंखें आग की होती है और नाख़ुन लोहे के इतने लम्बे कि एक दिन पूरा चलकर उनके ख़त्म तक पहुंचा जाए। उसकी आवाज़ बिजली की कड़क की तरह होती है। वह यह कहता है कि मुझे मेरे रब ने तुझ पर मुसल्लत किया है कि तुझे सुबह की नमाज़ ज़ाया करने की वजह से आफ़ताब के निकलने तक मारे जाऊं और ज़ुहर की नमाज़ ज़ाया करने की वजह से ग़ुरूब तक और मग़रिब की नमाज़ की वजह से इशा तक और इशा की नमाज़ की वजह से सुबह तक मारे जाऊं। जब वह एक दफ़ा उसको मारता है तो उसकी वजह से वह मुर्दा सत्तर हाथ ज़मीन में धंस जाता है। इसी तरह क़ियामत तक उसको अज़ाब होता रहेगा और क़ब्र से निकलने के बाद तीन अज़ाब ये हैं–

एक हिसाब सख़्ती से किया जाएगा,

दूसरा हक़ तआला शानुहू का उस पर गुस्सा होगा,

तीसरे जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाएगा।

यह कुल मीज़ान (टोटल) चौदह हुई। मुम्किन है कि पंद्रहवां भूल से रह गया हो। और एक रिवायत में यह भी है कि उसके चेहरे पर तीन लाइनें लिखी हुई होती हैं–

पहली सतर, ओ अल्लाह के हक़ को ज़ाया करने वाले!

दूसर सतर, ओ अल्लाह के गुस्से के साथ मख़्सूस!

तीसरी सतर, जैसा कि तूने दुनिया में अल्लाह के हक़ को ज़ाया किया, आज तू अल्लाह की रहमत से मायूस है।

(फ़ज़ाइले आमाल)

इसलिए पांचों वक़्त की बा–जमाअत नमाज़ की पाबंदी करे और कलामे पाक की तिलावत का एहतिमाम करे। आमीन। और इस सियाहकार (हिन्दी में इस किताब को लिखने वाले कि) मग़्फ़िरत के लिए दुआ करें।